राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत (नासी)

5, लाजपत राय मार्ग, प्रयागराज – 211002

राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत (नासी), प्रयागराज के हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह, सोमवार, 30 सितंबर 2019 को सायं 04:15 बजे नासी के प्रोफेसर एम0जी0के0 मेनन हॉल में मनाया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में प्रोफसर कृष्ण कुमार, डीन, विज्ञान संकाय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथियों में प्रोफेसर सत्य देव, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं महासचिव, नासी, प्रयागराज; प्रोफेसर बी0 रामाकृष्णन, कोषाध्यक्ष, नासी; प्रोफेसर यू0सी0 श्रीवास्तव, प्रबंध संपादक (बायो), नासी; श्री प्रकाश चन्द्र मिश्र, उप निदेशक (राजभाषा), लखनऊ; तथा डॉ0 ममता श्रीवास्तव, प्रयागराज उपस्थित रही। समारोह की अध्यक्षता डा0 नीरज कुमार, कार्यकारी सचिव, नासी एवं अध्यक्ष, रा0का0स0 ने की।

बैठक में निम्नलिखित सदस्य एवं अन्य अतिथि सदस्य उपस्थित थे –

1. प्रोफसर कृष्ण कुमार, डीन, विज्ञान संकाय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय – मुख्य अतिथि
2. प्रोफेसर सत्य देव, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं महासचिव, नासी – विशिष्ट अतिथि
3. प्रोफेसर बी0 रामाकृष्णन, कोषाध्यक्ष, नासी – विशिष्ट अतिथि
4. प्रो0 यू0सी0 श्रीवास्तव, प्रबंध संपादक (बायो), नासी – विशिष्ट अतिथि
5. डॉ0 ममता श्रीवास्तव, प्रयागराज – विशिष्ट अतिथि
6. श्री प्रकाश चन्द्र मिश्र, उप निदेशक (राजभाषा), लखनऊ – विशिष्ट अतिथि
7. डा0 नीरज कुमार, अधिशाषी सचिव, नासी – अध्यक्ष, रा0का0स0
8. श्री अरविन्द कुमार श्रीवास्तव, उप अधिशाषी सचिव – उपाध्यक्ष, रा0का0स0
9. श्री भानू प्रताप सिंह, सहायक अधिशाषी सचिव – सचिव, रा0का0स0
10. डा0 संतोष कुमार शुक्ला, सहायक अधिशाषी सचिव – कोषाध्यक्ष, रा0का0स0
11. डा0 पवित्रा टण्डन, सहायक अधिशाषी सचिव – उपसचिव, रा0का0स0
12. श्रीमती दीप्ति जायसवाल, अनुभाग अधिकारी – सदस्य, रा0का0स0
13. श्री अंकित कुमार त्रिवेदी, सहायक – सदस्य, रा0का0स0
14. श्री शक्तिशील चतुर्वेदी, सहायक – सदस्य, रा0का0स0
15. श्री राघवेन्द्र प्रताप, सहायक – सदस्य, रा0का0स0
16. श्री नवीन कुमार श्रीवास्तव, सहायक – सदस्य, रा0का0स0
17. श्री दीपक वर्मा, सहायक – सदस्य, रा0का0स0
18. डा0 चितरंजन कुमार शर्मा, तकनीकी संपादक (संविदा) – अतिथि सदस्य, रा0का0स0
19. डा0 स्मिता वेंकटेश, गंगा रिसर्च एसोसिएट – अतिथि सदस्य, रा0का0स0
20. डा0 वृद्धि निगम, गंगा रिसर्च एसोसिएट – अतिथि सदस्य, रा0का0स0
21. श्रीमती मीरा शुक्ला, गंगा गैलरी सहायक (संविदा) – अतिथि सदस्य, रा0का0स0
22. श्री राजीव मिश्र, लेखा विभाग सहायक (संविदा) – अतिथि सदस्य, रा0का0स0
23. कु0 रश्मि मिश्रा, सहायक (संविदा) – अतिथि सदस्य, रा0का0स0
24. श्री आशुतोष मिश्रा, सहायक (संविदा) – अतिथि सदस्य, रा0का0स0

श्री अरविन्द कुमार श्रीवास्तव, उप अधिशाषी सचिव, नासी; उपाध्यक्ष, रा0का0स0 नासी ने समारोह में उपस्थित मुख्य अतिथि; विशिष्ट अतिथियों तथा उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत करते हुए कहा कि नासी में विगत कई वर्षों से हिंदी पखवाड़ा मनाया जा रहा है। इसमें नासी के कर्मचारियों के मध्य हिंदी में विभिन्न प्रतियोगिताऐं आयोजित की जाती हैं तथा कर्मचारियों को पुरस्कृत भी किया जाता है।

प्रोफेसर यू0सी0 श्रीवास्तव ने अपने संक्षिप्त मुख्य उद्बोधन में कहा कि सरकारी कार्यालयों में हिंदी में कार्य होने लगा है पर उस तरह से नहीं हो रहा है जैसे यूरोपियन देशों में होता है। फ्रांस के सभी नागरिक फ्रेंच में बात करते है, फ्रेंच में ही लिखते पढ़ते है किसी अन्य भाषा का प्रयोग नही करते हैं। परन्तु हमारे देश में लोग हिंदी में लिखाई/पढ़ाई/बात न करके अंग्रेजी में करते हैं। अन्य देश जैसे रूस, चीन आदि में हिंदी पढ़ाई जा रही है परन्तु हम भारतवासी हिंदी के प्रचार–प्रसार के प्रति बहुत सजग नही हैं। भारतवासियों को हिंदी के प्रति अपनी सजगता बढ़ानी होगी और हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाने में अपना योगदान देना होगा।

प्रोफेसर बी0 रामाकृष्णन ने अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में कहा कि हिंदी भाषा में ज्यादा से ज्यादा कार्य करने की आवश्यकता है तभी हिंदी भारत की राष्ट्र भाषा बन सकेगी।

प्रोफेसर सत्य देव ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि सरकार ने सभी केन्द्र शासित कार्यालयों में हिंदी में कार्य करना आवश्यक कर दिया है तथा कार्यालयों में ज्यादा से ज्यादा हिंदी में कार्य करने को बढ़ावा देने के लिए हिंदी पखवाड़ा मनाया जाता है। इस पखवाड़े के दौरान कर्मचारियों के मध्य हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी का भी यही सपना था कि सारा राष्ट्र एक भाषा हिंदी बोले। उन्होंने बताया कि भारतीय संविधान में राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों के लिए हिंदी के अतिरिक्त 21 अन्य भाषाओं को राजभाषा के रूप में स्वीकृति प्रदान की है। भारत एक ऐसा देश है जहां विभिन्न राज्यों की भाषाएं, रीति–रिवाज अलग हैं फिर भी देश एक सूत्र में बंधा हुआ है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता आचार्य विनोबा भावे को 14 भाषाएं आती थी। हमें भी विनोबा भावे की तरह जितनी भाषा का ज्ञान हो उतना अच्छा होगा। हमें अन्य राज्यों की भाषाओं को भी सीखना चाहिए, इस प्रकार अन्य राज्य के लोगो में भी हिंदी के प्रति प्यार बढ़ेगा।

डॉ0 ममता श्रीवास्तव जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि राजभाषा सरकारी भाषा है यह एक या भिन्न हो सकती है। राष्ट्रभाषा एक ही होती है जो पूरे देश में बोली, लिखी और समझी जाती है और वह राष्ट्रभाषा उस देश की संस्कृति की परिचायक होती है। स्वतंत्रता संग्राम के समय हिंदी ने सभी को एक सूत्र में बांधने का काम किया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, आचार्य विनोबा भावे तथा सुभाष चन्द्र बोस ने भी कहा था कि देश को एक सूत्र में बांधने के लिए हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि हिंदी भाषा में एक अनुभूति और स्पंदन है। यह अपने देश और विदेशों में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। गैर हिंदी क्षेत्रों तथा दक्षिण भारत के स्कूलों में हिंदी पढ़ाई जाती है। हिंदी बहुत ही सरल और मधुर भाषा है। इसे धर्म और जाति से ऊपर उठकर पूरे देश को अपनाना चाहिए। हिंदी में गतिशीलता एवं विकासशीलता है। यह अन्य भाषाओं उर्दू, फारसी, अंग्रेजी के शब्दों को बड़े ही आसानी से अपने में समाहित कर लेती है। गूगल में भी अब हिंदी आ गयी है। देश के कवियों, रचनाकारों, लेखकों ने हिंदी के उत्थान और विकास में बहुत कार्य किये हैं जो अतुलनीय है। हमारे देश के बहुत से नेताओं ने विदेशों में हिंदी का परचम लहराया है। अन्त में उन्होंने कहा कि **"राष्ट्र का सम्मान है हिंदी, शब्दों का भण्डार है हिंदी"**।

मुख्य अतिथि, प्रोफसर कृष्ण कुमार, डीन, विज्ञान संकाय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि यहां पर उपस्थित हमारे वरिष्ठ साथीगण हिंदी व अंग्रेजी दोनों में पारंगत हैं। आप लोग बधाई के पात्र हैं कि हिंदी को आगे बढ़ाने के लिए इस तरह का आयोजन करते हैं। हिंदी में वो क्षमता है जो पूरे भारत वर्ष को एक सूत्र में समेट कर रख सकती है। हिंदी काव्यमय तथा वैज्ञानिक भाषा है और इसका उद्‌गम संस्कृत से सिंधु घाटी में हुआ है। सिन्धु से ही हिंदी बनी है। देवनागरी सबसे प्राचीन हिंदी लिपि है। 130 देशों में हिंदी बोली और पढ़ी जाती है। पूर्व प्रधानमंत्री स्व0 अटल बिहारी बाजपेयी जी को हिंदी से बहुत लगाव था। 1977 में विदेश मंत्री के तौर पर काम कर रहे अटल बिहारी बाजपेयी जी ने संयुक्त राष्ट्रसंघ में अपना पहला भाषण हिंदी में देकर सभी के दिल में हिंदी भाषा का गहरा प्रभाव छोड़ा था। बाजपेयी जी का यह हिंदी भाषण संयुक्त राष्ट्र में आए सभी प्रतिनिधियों को इतना पसंद आया था कि सबने खड़े होकर अटल जी के लिए तालियां बजाई। हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री जी भी हिंदी में ही भाषण देते हैं। हमें हिंदी भाषा के शब्दों को आत्मसात करना होगा। इसे सर्वग्राह्य और सुगम बनायें न कि थोपें।

श्री प्रकाश चन्द्र मिश्र, उप निदेशक (राजभाषा), लखनऊ ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि डा0 नीरज जी एवं उनके सहयोगियों द्वारा नासी में वैज्ञानिक गतिविधियों के साथ–साथ हिंदी में भी बहुत काम किया जाता है। जिन कर्मचारियों ने हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया और प्रतियोगिताएं जीतीं वे बधाई के पात्र हैं। श्री मिश्र ने कहा अरबी–फारसी अलग भाषा है परन्तु उर्दू हमारी अपनी भाषा है जिसका चलन मेरठ की छावनी से शुरू हुआ। उर्दू, अंग्रेजी, तेलगु के शब्दों को हमें सहज रूप से अपनाना चाहिए। कार्यालयों में अथवा अन्य स्थानों पर हिंदी के सरल और सुबोध शब्दों का प्रयोग ज्यादा से ज्यादा करें। आवश्यकतानुसार अंग्रेजी के स्कूलों में बच्चों को पढ़ायें परन्तु हिंदी का पूर्ण ज्ञान उन्हें अवश्य दें। हिंदी बहुत आगे बढ़ चुकी है। यह हमारी और आप की मोहताज नही है। उन्होंने कहा कि वह दिन दूर नही जब हिंदी भाषा देश की राष्ट्रभाषा होगी और संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषा होगी।

डा0 नीरज कुमार, अध्यक्ष, रा0का0स0 एवं कार्यकारी सचिव, नासी ने मुख्य अतिथि एवं उपस्थित विशिष्ट अतिथियों को हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह में अपना अमूल्य समय देने के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि सभी अतिथियों ने हिंदी भाषा को आगे बढ़ाने के लिए अलग–अलग बिन्दुओं पर चर्चा की। हिंदी की विशेष प्रतिभा के बारे में बात किया कि सभी समाज, सभी शब्दों को अपने में समाहित करने की क्षमता हिंदी भाषा में है। उन्होंने बताया कि हिंदी भाषा को कवियों, रचनाकारों, साहित्यकारों ने किस तरह से आगे बढ़ाने, प्रचारित करने का कार्य किया। उन्होंने कहा कि मिश्रा जी हिंदी के बहुत बड़े ज्ञाता है तथा हिंदी के व्यापक प्रयोग तथा हिंदी को प्रचारित करने में प्रयासरत हैं। डा0 कुमार ने कहा हमें अपनी भाषा हिंदी पर गर्व होना चाहिए तथा इसको थोपने की आवश्यकता नहीं है। हिंदी अपने आप में सर्वधर्म सम्पन्न भाषा है। हमें हिंदी को इतना ग्राह्य, रोचक, सुगम, और बोधगम्य बनाना चाहिए कि सबको यह भाषा पसन्द आये। हिंदी का प्रचार–प्रसार हम सब को मिल कर करना होगा तभी देश की भाषा, राष्ट्र की भाषा बन पायेगी।

कार्यक्रम के अन्त में मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों को सम्मानित किया गया तथा **हिंदी पखवाड़ा** के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों द्वारा पुरस्कार दे कर सम्मानित किया गया –

- **"व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित कहानी लेखन प्रतियोगिता"** के विजेता रहे– **प्रथम** श्रीमती दीप्ति जायसवाल **द्वितीय** श्रीमती मीरा शुक्ला, **तृतीय** डा0 वृद्धि निगम

- **शब्दार्थ** प्रतियोगिता के विजेता रहे– **प्रथम** श्रीमती मीरा शुक्ला एवं श्री नवीन कुमार श्रीवास्तव **द्वितीय** श्री दीपक वर्मा, **तृतीय** डा0 वृद्धि निगम **सांत्वना** डॉ स्मिता वेंकटेश

- **अभिभाषण** प्रतियोगिता के विजेता रहे– **प्रथम** श्री शक्तिशील चतुर्वेदी, **द्वितीय** श्री अंकित कुमार त्रिवेदी, **तृतीय** डा0 वृद्धि निगम तथा श्री नवीन कुमार श्रीवास्तव

- **हिंदी टंकण** प्रतियोगिता के विजेता रहे– **प्रथम** श्रीमती मीरा शुक्ला **द्वितीय** श्री राजीव मिश्र

- पच्चीस शब्दों की **कविता लेखन** प्रतियोगिता के विजेता रहे **प्रथम** श्रीमती मीरा शुक्ला **द्वितीय** श्री अंकित कुमार त्रिवेदी, **तृतीय** सुश्री रश्मि मिश्रा

- हिंदी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता के विजेता रहे– **प्रथम** श्री नवीन कुमार श्रीवास्तव, **द्वितीय** श्रीमती दीप्ति जायसवाल एवं श्री अंकित कुमार त्रिवेदी, **तृतीय** श्री राघवेन्द्र प्रताप

- श्री आशुतोष मिश्रा को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।

उपरोक्त प्रतियोगिताओं के निर्णायक मण्डल में डॉ नीरज कुमार, श्री अरविन्द कुमार श्रीवास्तव, श्री भानू प्रताप सिंह, डा0 संतोष कुमार शुक्ला, तथा डा0 पवित्रा टण्डन रहे।

हिन्दी में वर्षपर्यन्त उत्कृष्ट कार्य करने हेतु पुरस्कार

श्री अरविन्द कुमार श्रीवास्तव, उपाध्यक्ष, रा0भा0का0समिति एवं उपअधिशाषी सचिव, नासी की अध्यक्षता में एक बैठक दिनांक 30–09–2019 को अकादमी के कमेटी कक्ष में सुबह 11:00 बजे हुई। जिसमें हिन्दी में वर्षपर्यन्त उत्कृष्ट कार्य करने हेतु कार्यालय के समस्त कर्मचारियों के कार्यों का आकलन करने के पश्चात सर्वसम्मति से **डा0 चितरंजन कुमार शर्मा**, तकनीकी संपादक (संविदा) को **प्रथम**, **श्रीमती मीरा शुक्ला**, गंगा गैलरी सहायक (संविदा) को **द्वितीय**, तथा **श्री आशुतोष मिश्रा**, सहायक (संविदा)को **तृतीय** पुरस्कार हेतु चुना गया। उपस्थित गणमान्य अतिथियों द्वारा उन्हें नकद पुरस्कार राशि दे कर सम्मानित किया गया।

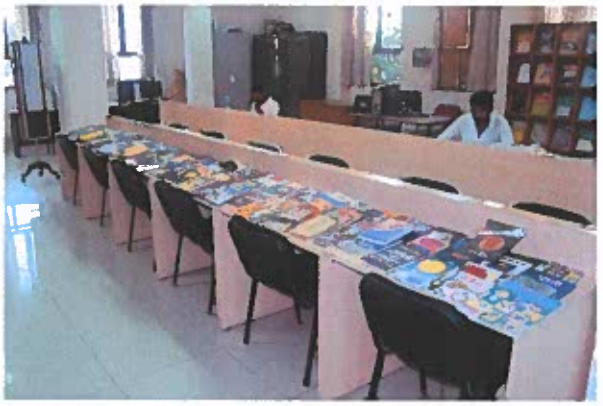

हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शनी : हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शनी का आयोजन दिनांक 25 से 30 सितम्बर 2019 को प्रातः 10:00 बजे से शाम 5:30 तक किया गया। इस प्रदर्शनी में पूर्व राष्ट्रपति एवं महान वैज्ञानिक माननीय अब्दुल कलाम जी द्वारा लिखी गयी पुस्तकों तथा अन्य वैज्ञानिकों द्वारा हिंदी में लिखी/अनुवाद की गयी विज्ञान की पुस्तकों को प्रदर्शित किया गया।

चर्चा के अन्त डा0 पवित्रा टण्डन, उपसचिव, रा0का0स0 ने उपस्थित सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापन दिया।